IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 1 of 35 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

एमपीएसई-004

(हिन्दी माध्यम)

FROM PREVIOUS YEAR PAPER's

IMPORTANT QUESTION ANSWER's

Guess Paper / Exam Notes

By India's No.1 - Mother Publication

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 35 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

खंड-I

10 अंकों के प्रश्न - प्रत्येक 400-500 शब्द

प्रश्न - औपनिवेशिक काल के दौरान उदार विचारों के संदर्भ में राष्ट्रवाद और इसकी विशेषताओं पर चर्चा करें।

उत्तर- औपनिवेशिक काल के दौरान, राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के रूप में उभरा, जिसने लोगों को एक समान पहचान, संस्कृति और राजनीतिक आकांक्षा के आधार पर एकजुट करने का प्रयास किया। यह औपनिवेशिक प्रभुत्व के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया भी थी और आत्मनिर्णय एवं स्वतंत्रता के सिद्धांतों से प्रेरित एक आंदोलन भी। राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक अवधारणा नहीं थी; इसके सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक आयाम भी थे जिन्होंने भारत जैसे उपनिवेशित देशों में स्वतंत्रता संग्राम को आकार दिया।

औपनिवेशिक काल में राष्ट्रवाद की एक प्रमुख विशेषता **राष्ट्रीय चेतना पर ज़ोर था** । बुद्धिजीवियों और नेताओं ने लोगों को अपने साझा इतिहास, भाषा, संस्कृति और परंपराओं को सामूहिक पहचान के आधार के रूप में पहचानने के लिए प्रोत्साहित किया। इस सांस्कृतिक पुनरुत्थान ने स्वदेशी प्रथाओं पर गर्व को बढ़ावा दिया और अक्सर औपनिवेशिक सांस्कृतिक आधिपत्य का विरोध करने के एक उपकरण के रूप में कार्य किया।

एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता **राजनीतिक लामबंदी थी** । राष्ट्रवादी नेताओं ने यूरोप में प्रचलित उदारवादी विचारों, जैसे लोकतंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, संविधानवाद और कानून के शासन से प्रेरणा ली। इन उदारवादी सिद्धांतों ने नागरिक अधिकारों, शासन में भागीदारी और नागरिक उत्तरदायित्व के महत्व पर ज़ोर दिया। औपनिवेशिक समाजों में, उदारवादी विचारों ने सुधारों, प्रतिनिधि संस्थाओं और अंततः स्वशासन की माँग को प्रभावित किया।

आर्थिक आत्म-प्रतिष्ठा भी शामिल थी । उपनिवेशित राष्ट्रों ने यह स्वीकार किया कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। इसके परिणामस्वरूप स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने, स्वदेशी (आत्मनिर्भरता) और शोषणकारी औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के प्रतिरोध के आंदोलन शुरू हुए। आर्थिक राष्ट्रवाद ने राजनीतिक आकांक्षाओं का पूरक बनकर स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के बीच के संबंध को उजागर किया।

FOR MORE PDF 9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 35 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

एक और विशेषता **सामाजिक सुधार और समावेशिता थी** । राष्ट्रवादी आंदोलनों ने आंतरिक सामाजिक असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया, यह मानते हुए कि एक मजबूत और एकजुट राष्ट्र के लिए सामाजिक सामंजस्य आवश्यक है। नेताओं ने प्रगति और मानव विकास के उदारवादी आदर्शों के साथ तालमेल बिठाते हुए शिक्षा, सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन और नागरिक जागरूकता को बढ़ावा दिया।
अंततः, औपनिवेशिक काल के दौरान राष्ट्रवाद **सामूहिक कार्रवाई और जन भागीदारी द्वारा चिह्नित था** । उदार विचारों ने संवाद, बहस और संगठित राजनीतिक गतिविधि को प्रोत्साहित किया, जिससे राजनीतिक संघों, दलों और आंदोलनों का गठन संभव हुआ, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक वर्गों के लोगों को संगठित किया।
निष्कर्षतः, औपनिवेशिक काल में राष्ट्रवाद ने साझा पहचान की भावना को स्वतंत्रता, समानता और राजनीतिक भागीदारी के उदार सिद्धांतों के साथ जोड़ा। यह एक बहुआयामी आंदोलन था जिसका उद्देश्य सांस्कृतिक गौरव को जगाना, राजनीतिक सुधारों को बढ़ावा देना, आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करना और सामाजिक एकता को बढ़ावा देना था, जिसने अंततः स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी।

प्रश्न - दयानंद के धार्मिक -राजनीतिक विचारों का वर्णन कीजिए। सरस्वती .

उत्तर- दयानंद सरस्वती , आर्य समाज की संस्थापक समाज (1875), आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली धार्मिक और समाज सुधारकों में से एक थे। उनके धार्मिक -राजनीतिक विचार वैदिक सिद्धांतों, बुद्धिवाद और एक नैतिक रूप से जागृत एवं राजनीतिक रूप से सशक्त भारतीय समाज की दृष्टि पर आधारित थे। उनके विचारों ने 19 वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद और सामाजिक-धार्मिक सुधार के लिए एक मज़बूत वैचारिक आधार तैयार किया।

1. वैदिक पुनरुत्थानवाद और धार्मिक सुधार

दयानंद सरस्वती का मानना था कि **वेद ही सच्चे ज्ञान का अंतिम स्रोत हैं** । उन्होंने हिंदू समाज में व्याप्त मूर्तिपूजा, पुरोहिती, जटिल कर्मकांडों और अंधविश्वासों का खंडन किया। उनका आदर्श वाक्य, **"वेदों की ओर लौटो"**, वैदिक धर्म की पवित्रता, सरलता और तार्किकता पर ज़ोर देता था। उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन किया और ईश्वर को निराकार, शाश्वत और सर्वव्यापी माना। वैदिक शिक्षाओं का प्रचार करके, उन्होंने हिंदुओं में आत्मविश्वास जगाने और तर्क एवं नैतिकता के आधार पर समाज में सुधार लाने का प्रयास किया।

2. सामाजिक समानता और सुधार

दयानंद ने धर्म को सामाजिक उत्थान से जोड़ा । उन्होंने जन्म के आधार पर जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध किया और **योग्यता और योग्यता (गुण और कर्म पर आधारित वर्ण) पर आधारित जाति व्यवस्था का समर्थन किया** ।
उन्होंने **महिला अधिकारों के लिए अभियान चलाया** , विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा का समर्थन किया और बाल विवाह, पर्दा प्रथा और सती प्रथा की निंदा की।
आर्य धर्म के माध्यम से समाज में , उन्होंने **सभी के लिए शिक्षा को बढ़ावा दिया** , गुरुकुलों और स्कूलों की स्थापना की, जिनमें नैतिक चरित्र, शारीरिक शक्ति और बौद्धिक विकास पर जोर दिया गया।

3. राष्ट्रवादी अभिविन्यास

यद्यपि दयानंद मुख्यतः एक धार्मिक सुधारक थे, उनके कई विचारों के स्पष्ट राजनीतिक निहितार्थ थे। **स्वाभिमान , स्वधर्म और स्वराज पर उनके ज़ोर ने प्रारंभिक राष्ट्रवादी विचारों को प्रेरित किया। उन्होंने भारतीयों को नैतिक और बौद्धिक रूप से** विदेशी प्रभाव से मुक्त होने के लिए प्रोत्साहित किया।
उनका नारा **"भारत भारतीयों के लिए"** बाद के राष्ट्रीय नेताओं के लिए एक शक्तिशाली वैचारिक शक्ति बन गया। उन्होंने समाज में स्वदेशी भाषाओं के प्रयोग और आत्मनिर्भरता का भी समर्थन किया।

4. राजनीतिक सुधार और नैतिक शासन

दयानंद ने **धर्म** पर आधारित एक राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना की थी । उनका मानना था कि शासकों को नैतिक रूप से ईमानदार, शिक्षित और लोक कल्याण के लिए समर्पित होना चाहिए। अपनी रचना *सत्यार्थ में, प्रकाश* ने न्याय, समानता और जवाबदेही के महत्व पर ज़ोर देते हुए, नियंत्रण और संतुलन वाला एक शासन मॉडल प्रस्तावित किया।
उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की शोषणकारी प्रकृति की आलोचना की और भारतीयों को राष्ट्र की प्रगति के लिए एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित किया।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" ALL PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 35 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

निष्कर्ष

दयानंद सरस्वती की धार्मिक -राजनीतिक विचारों ने आध्यात्मिक पुनरुत्थान को सामाजिक और राजनीतिक जागृति के साथ जोड़ा। वैदिक मूल्यों, सामाजिक समानता, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रवादी चेतना को बढ़ावा देकर, उन्होंने भारत के आधुनिक सुधार आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक मज़बूत वैचारिक आधार तैयार किया। उनके विचार भारतीय समाज को, विशेष रूप से शिक्षा, राष्ट्रवाद और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में, आज भी प्रभावित करते हैं।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT - HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905 OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति उदारवादियों और उग्रवादियों के दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- **ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति उदारवादियों और उग्रवादियों के दृष्टिकोण में अंतर**

19 वीं सदी के अंत और 20 वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मोटे तौर पर दो समूहों में विभाजित थी: **उदारवादी** और **गरम दल** । हालाँकि दोनों का उद्देश्य ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था, लेकिन उनके तरीके, विचारधारा और राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके काफी भिन्न थे।

1. दृष्टिकोण और तरीके :

उदारवादी **शांतिपूर्ण, क्रमिक सुधारों में विश्वास करते थे** और **ब्रिटिश साम्राज्य के ढांचे के भीतर काम करना चाहते थे। वे भारतीयों के लिए सुधार और राजनीतिक अधिकार सुनिश्चित करने के लिए याचिकाओं, प्रस्तावों, बैठकों और ब्रिटिश सरकार से अपील जैसे संवैधानिक तरीकों पर निर्भर थे। गोपाल कृष्ण गोखले , दादाभाई नौरोजी** जैसे नेता **नौरोजी और फिरोजशाह मेहता** ने ब्रिटिश अधिकारियों से बातचीत, अनुनय और नैतिक अपील पर जोर दिया।

दूसरी ओर, उग्रवादी स्वशासन प्राप्त करने के लिए **प्रत्यक्ष कार्रवाई और मुखर तरीकों की वकालत करते थे। वे उदारवादियों द्वारा प्रचारित सुधारों की धीमी गति से अधीर थे और ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने के लिए आंदोलन, जन-विरोध, बहिष्कार और कभी-कभी क्रांतिकारी गतिविधियों में विश्वास करते थे। बाल गंगाधर** जैसे नेता **तिलक , लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल ने** राष्ट्रवाद को प्रेरित करने और जनता को संगठित करने के लिए " **स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा " जैसे नारे को बढ़ावा दिया।**

2. ब्रिटिश सरकार के प्रति रवैया : उदारवादियों ने ब्रिटिश सरकार के प्रति

वफ़ादारी का रवैया अपनाया , उनका मानना था कि अगर समझदारी और धैर्य से काम लिया जाए तो अंग्रेजों को भारत को और ज़्यादा राजनीतिक शक्ति देने के लिए राजी किया जा सकता है। उनका उद्देश्य **भारतीयों को धीरे-धीरे स्वशासन के लिए शिक्षित और तैयार करना था** ।

उग्रवादी अंग्रेजों के प्रति **आलोचनात्मक और टकरावपूर्ण थे, उन्हें शोषक मानते थे जो स्वेच्छा से सत्ता नहीं छोड़ेंगे। वे भारतीय पहचान और आत्मविश्वास को स्थापित करना चाहते थे** और राजनीतिक परिवर्तन के लिए कड़े कदम उठाने को तैयार थे।

3. जन-आंदोलन बनाम अभिजात वर्ग का नेतृत्व :

उदारवादी मुख्यतः राजनीतिक आंदोलनों के नेतृत्व के लिए **शिक्षित अभिजात वर्ग और बुद्धिजीवियों पर निर्भर थे** । उनके कार्यक्रम अक्सर शहरों तक ही सीमित रहते थे और कानूनी तथा विधायी सुधारों पर केंद्रित होते थे।

जन-आंदोलन पर ध्यान केंद्रित किया , खासकर किसानों, मज़दूरों और युवाओं के बीच। उन्होंने आम लोगों को आज़ादी के संघर्ष में शामिल करने के लिए प्रदर्शन, जनसभाएँ और ब्रिटिश वस्तुओं व संस्थाओं का बहिष्कार किया।

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 35 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

4. वैचारिक दृष्टिकोण :

उदारवादी राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए **क्रमिक सुधार, नैतिक अनुनय और संवैधानिक साधनों में विश्वास करते थे। उग्रवादी** औपनिवेशिक उत्पीड़न का सामना करने के लिए **दृढ़ राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता और कभी-कभी क्रांतिकारी तरीकों में विश्वास करते थे।**

संक्षेप में, जहाँ **उदारवादी क्रमिक, संवैधानिक सुधारों और अंग्रेजों के साथ सहयोग को प्राथमिकता देते थे** , वहीं **उग्रवादी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए तत्काल स्वशासन और प्रत्यक्ष कार्रवाई की माँग करते थे** । दोनों दृष्टिकोण, यद्यपि भिन्न थे, ने सामूहिक रूप से भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन को आकार दिया।

प्रश्न - श्री अरविन्द के राष्ट्रवाद के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- श्री अरविंद का राष्ट्रवाद का सिद्धांत भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन की सबसे आध्यात्मिक और दार्शनिक व्याख्याओं में से एक है। कई राजनीतिक नेताओं के विपरीत, जो राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के संघर्ष के रूप में देखते थे, अरविंद ने इसे राष्ट्र की आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से एक गहन, दिव्य प्रक्रिया के रूप में देखा। उनका राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक मुक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक पुनरुत्थान, नैतिक उत्थान और मानवता के आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में भारत के उदय तक विस्तृत था।

अरबिंदो का मानना था कि राष्ट्र केवल एक भौगोलिक क्षेत्र या राजनीतिक इकाई नहीं है; यह एक *जीवित आत्मा है* , एक सामूहिक चेतना है। उन्होंने राष्ट्र को **" भवानी" कहा। भारती "** , एक दिव्य माँ जिनकी जागृति देशभक्ति और त्याग को जन्म देती है। उनके लिए, राष्ट्रवाद एक **आध्यात्मिक मिशन था** , और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक दिव्य योजना की पूर्ति के लिए किया गया एक पवित्र कर्तव्य था। यह आध्यात्मिक आयाम अरबिंदो के विचारों को पश्चिम के विशुद्ध राजनीतिक राष्ट्रवाद से अलग करता था।

राजनीतिक रूप से, अरबिंदो **पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज्य)** के समर्थक थे । **स्वराज)** एक लोकप्रिय मांग बनने से बहुत पहले ही शुरू हो गया था। उन्होंने क्रमिक सुधारों के उदारवादी दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया और उनका मानना था कि स्वतंत्रता प्रत्येक राष्ट्र का जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होंने निष्क्रिय प्रतिरोध, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वदेशी संस्थानों के निर्माण की वकालत की। हालाँकि, ये राजनीतिक पहल भी उनके इस विश्वास पर आधारित थीं कि भारत को औपनिवेशिक ढाँचों पर निर्भर रहने के बजाय अपनी आंतरिक शक्ति पर भरोसा करना चाहिए।

सांस्कृतिक रूप से, अरबिंदो ने भारत की प्राचीन विरासत के पुनरुद्धार पर ज़ोर दिया। उनका तर्क था कि भारत की असली पहचान उसकी आध्यात्मिक परंपराओं, धर्मग्रंथों और नैतिक मूल्यों में निहित है। उनके अनुसार, राष्ट्रवाद सांस्कृतिक स्वाभिमान और सभ्यतागत गौरव के बिना अधूरा है। इसलिए, उन्होंने भारतीयों को अपनी जड़ों को फिर से खोजने और उन्हें आधुनिक प्रगति के साथ एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अरबिंदो ने आक्रामक या अंधराष्ट्रवादी राष्ट्रवाद का भी खंडन किया। वे **सार्वभौमिक राष्ट्रवाद में विश्वास करते थे** , जहाँ एक राष्ट्र की स्वतंत्रता समस्त मानवता की प्रगति में योगदान देती है। उनके लिए, राष्ट्रवाद मानव एकता की ओर ले जाना चाहिए, संघर्ष की ओर नहीं। सक्रिय राजनीति से हटने के बाद, उनके लेखन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत की मुक्ति अंततः मानवता को एक उच्च आध्यात्मिक चेतना प्राप्त करने में मदद करेगी।

निष्कर्षतः, श्री अरबिंदो का राष्ट्रवाद का सिद्धांत राजनीतिक सक्रियता, सांस्कृतिक पुनरुत्थानवाद और आध्यात्मिक दर्शन का एक अनूठा मिश्रण है। उन्होंने राष्ट्रवाद को एक पवित्र और परिवर्तनकारी शक्ति में बदल दिया, जिसका उद्देश्य न केवल भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराना था, बल्कि मानव सभ्यता का उत्थान भी था।

प्रश्न - मुहम्मद अली जिन्ना के द्विराष्ट्र सिद्धांत का परीक्षण करें।

उत्तर- पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना का विशेष रूप से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत से नाता है, जो 1947 में पाकिस्तान के निर्माण का वैचारिक आधार बना। इस सिद्धांत का मानना था कि भारतीय उपमहाद्वीप में हिंदू और मुसलमान न केवल अलग-अलग धर्मों के अनुयायी हैं, बल्कि अलग-अलग संस्कृतियों, सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक आकांक्षाओं वाले अलग-अलग राष्ट्र हैं। इसलिए, जिन्ना का तर्क था कि मुसलमान हिंदू बहुसंख्यकों के प्रभुत्व वाले एक एकल राष्ट्रवादी भारतीय राज्य के अधीन सह-अस्तित्व में नहीं रह सकते।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources